Vol 4 Issue 10 April 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts ISSN 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-10 | April-2015 Available online at www.aygrt.isrj.org

आदिवासी महिला श्रमिकों की चयनित क्षेत्रों में विकास परियोजनओं का आदिवासी महिला श्रमिकों की शैक्षणिक स्थिति पर पड़ने वाले वाले प्रभावों का अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के विषेश संदर्भ में)

अर्चना सिंह
शोध छात्रा ,गुरू घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रिय विश्वविद्यालय), बिलासपुर (छ.ग.)

Co-Author Details :

मनीशा दुबे
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग गुरू घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रिय विश्वविद्यालय), बिलासपुर (छ.ग.)

1.प्रस्तावना –

भारतीय समाज में सनातन काल में महिलाओं को देवी के रूप में मानते थे। परिवार, समाज और देश में महिलाओं का स्थान सर्वोच्च था।

उत्तर वैदिक काल में पुत्री की अपेक्षा पुत्र का आगमन अधिक मांगलिक माना जाता था, फिर भी पुत्री का स्थान सम्मानजनक था। मध्यकाल में स्त्रियों का जितना पतन हुआ उतना कभी नहीं हुआ।

18 वीं, 19 वीं व मध्य 20 वीं शताब्दी तक जो, कि ब्रिटिश शासन का काल था इनमें स्त्रियों के जीवन में अदृश्य सुधार हुआ। शिक्षा, रोजगार, सामाजिक अधिकारों आदि को लेकर स्त्री पुरूषों के बीच असमानताओं में कमी आयी।

आदिकाल से ही भारतीय समाज पुरूष प्रधान रहा है। परम्परायें, प्रथायें, रूढ़ियां, रीतिरिवाज आदि ने महिलाओं को बेड़ियों की तरह जकड़ लिया था। महिलाओं की इतनी दयनीय स्थिति को देखते हुए, स्वतंत्रता प्राप्त के पश्चात् अनेक महापुरूषों तथा बुद्धिजीवियों ने उनकी स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेक प्रकार के आंदोलनों की शुरूआत की, परन्तु परिणाम पर्याप्त नहीं थे।

जबकि दूसरा परिदृश्य देखें तो प्राचीनकाल से ही अर्थव्यवस्था में महिलायें अपने परिवार के भरण–पोषण के लिये कृषि, मत्स्य–पालन, वन पशुपालन एवं अनेक प्रकार के कुटीर उद्योग में कार्यरत रही हैं। परिवार के भरण–पोषण में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका होने के बाद भी समाज में महिलाओं को वो स्थान प्राप्त नहीं है, जो कि पुरूष वर्ग को प्राप्त है। आज कोई ऐसा कार्य नहीं है, जो कि महिलायें नहीं कर सकती हैं। आज महिलाओं की जिम्मेदारियों में परिवर्तन आ रहा है, पहले महिलायें घर की चहार दीवारी के भीतर रहती थीं, लेकिन पंचायतों और नगर निगमों में 33 प्रतिशत आरक्षण के बाद महिलाओं को सार्वजनिक क्षेत्र और प्रषासनिक क्षेत्रों में कार्य करने, कई जिम्मेदारियां निभाने और अपनी प्रतिभा का विकास करने का अवसर मिला।

उपरोक्त शोध आदिवासी महिला श्रमिकों पर आधारित है अतः यह जानना अत्यंत आवश्यक है, कि महिला श्रमिक किसे कहते हैं ? महिला श्रमिकों से उन महिला मजदूरों का बोध होता है, जो विभिन्न विकासात्मक कार्यों में दैनिक अथवा मासिक मजदूरी पर लगी हुई हैं।

''भारत में दुनिया की सबसे अधिक जनजातीय आबादी है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल जानजातीय जनसंख्या 84.33 मिलियन थी, जो इस देश की जनसंख्या का लगभग 8.20 प्रतिशत थी। यह जनसंख्या उन जनजातिय समुदायों एवं समूहों की कुल संख्या थी, जिन्हें वर्ष 2001 की जनगणना के समय भारत के राष्ट्रपति द्वारा अनुसूचित जनजातियों के रूप में अधिसूचित किया

''सरकार ने इन विभिन्न आदिवासी समुदायों के विकास के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया है। चूंकि राज्य में छः विषेष पिछड़ी जनजाति समूह अभिकरण है। प्रदेष में अबुझ–माड़िया, बैगा, पहाड़ी कोरवा, विरहोर एवं कमार पांच जनजातियों को भारत सरकार द्वारा विषेष पिछड़ी जनजाति के समूह के रूप में मान्यता दी गयी है। राज्य में 85 आदिवासी विकास खण्ड है। अनुसूचित जनजातियों के उत्थान के लिये राज्य शासन द्वारा आदिवासी विकास विभाग के माध्यम से विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है, जिनमें षिक्षा विषयक योजनाएं प्रमुख हैं। विभाग द्वारा शालेय षिक्षा के अन्तर्गत शालाओं, छात्रावासों तथा आश्रम शालाओं का संचालन, विभिन्न प्रकार की छात्रवृतियों का वितरण, आवासीय–षिक्षण एवं तकनीकि प्रषिक्षण प्रषिक्षण संस्थाओं, छात्रावास/आश्रमों का संचालन, निःषुल्क पाठ्यपुस्तकों को प्रदान करने संबंधी योजनाएं संचालित की जा रही है। जिनमें प्रमुख हैं – शालेय षिक्षा, छात्रावास एवं आश्रम शालाएँ, एकीकृत आदिवासी विकास योजनाएं, छात्रवृतियां, निःषुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण, परीक्षा शुल्क प्रतिपूर्ति योजना, कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना, अषासकीय संस्थाओं को अनुदान, सामूहिक विवाह योजना, मध्यान्ह भोजन योजना, अत्याचार अधिनियम अन्तर्गत राहत कार्यक्रम प्रमुख है।''

आदिवासी विकास विभाग द्वारा विशेषकर महिलाओं को स्व–रोजगार के लिए कम ब्याज पर वित्तीय सहायता तथा सूचना तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रशिक्षण और शैक्षिक, ऋण प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त विकलागों के लिये भी लाइसेंस है उन्हें ऑटो रिक्शा देना, महिला उद्यमियों के लिये बिक्री केन्द्र, कैरियर के लिये रोजगार परीक्षा एवं साक्षात्कार संबंधी जानकारी देना, अल्पावास संबंधी सुविधा, विधवाओं, परित्यक्त और निराश्रित महिलाओं एवं उन पर आश्रित बच्चों के लिये गृह, सभी जिलों में महिला परिसर गृहणियों के लिये अल्पकालीन पाठ्यक्रम नोराड आदि।

सरकार ने ऐसी अनेक योजनाएं बनाई हैं, जिनमें आदिवासियों के लिये विषेष प्रावधान है। उपरोक्त शोध का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य है जो कि, आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों के अन्तर्गत शामिल है। यहां सरकार ने महिलाओं के उत्थान हेतु अनेक प्रकार की योजनाओं का क्रियान्वयन किया है जिनमें से निम्न महत्वपूर्ण योजनाओं का अध्ययन किया जा रहा है –

1.राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना
2.महिला स्व सहायता समूह
3.मत्स्य उद्योग प्रोत्साहन योजना
4.प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना

छत्तीसगढ़ की कुछ आदिवासी जागरूक महिलाओं ने इन विभिन्न विकास योजनों का लाभ उठाया परन्तु कुछ ऐसी महिलाएं भी हैं जो कि किसी कारणवष इन योजनाओं से अलग–थलग रह गयीं अतः विकास योजनाओं से लाभान्वित तथा विकास योजनाओं का लाभ ना उठाने वाली महिलाओं के सामाजिक स्थिति आयु, इंधन, उपचार, बुरी आदत, बात–व्यवहार का अध्ययन करना ही प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देष्य हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है

1.विकास परियोजनाओं का आदिवासी महिला श्रमिकों पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभावों जैसे–आय, व्यय, बचत, रोजगार आदि का अध्ययन करना ।
2.विकास परियोजनाओं का आदिवासी महिला श्रमिकों के सामाजिक जीवन स्तर (परंपराएं, प्रथाएं, रीति–रिवाज, चिकित्सा, स्वास्थ्य, रहन–सहन, मनोरंजन आदि) में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
3.विकास परियोजनाओं से आदिवासी महिला श्रमिकों की शैक्षणिक स्थिति में पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना ।

4.छत्तीसगढ़ के विकास में आदिवासी महिलाओं के योगदान का अध्ययन करना ।

शोध प्रविधिः–

1.प्रस्तुत अध्ययन हेतु आदिवासी बाहुल्य छत्तीसगढ़ राज्य के चार ऐसे जिलों (सरगुजा,सूरजपुर, कोरिया तथा जशपुर) का अध्ययन किया गया है। जो कि आदिवासी बाहुल्य तथा आदिवासियों के रीति–रिवाजों से सम्पन्न माने जाते हैं। आदिवासी जिलों में सरगुजा, सूरजपुर, कोरिया तथा जशपुर जिलों का चयन सविचार निदर्शन प्रणाली से किया गया है।
2.सरगुजा, सूरजपुर, कोरिया तथा जशपुर जिला जिसकी कुल जनसंख्या क्रमशः 2361321,660280, 659039, 82043 है। जनसंख्या के आधार पर सरगुजा, सूरजपुर, कोरिया तथा जशपुर जिले से एक–एक विकासखण्ड का चयन दैव–निदर्शन प्रणाली द्वारा किया गया है।
3.इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित 5 विकासखण्डों में से प्रत्येक विकासखण्ड 10–10 ग्राम पंचायतों का अध्ययन किया गया। इस प्रकार निदर्शन के अंतर्गत सम्मिलित कुल 50 ग्राम पंचायतों में से प्रत्येक ग्राम पंचायत से 5 ऐसी महिलाओं का अध्ययन किया जायेगा जो कि अध्ययन में सम्मिलित किसी न किसी विकास परियोजनाओं से जुडी हों तथा प्रत्येक ग्राम पंचायत से 5 ऐसी आदिवासी महिलाओं के साक्षात्कार अनुसूची भरवायी गयी है जो कि किसी भी विकास परियोना से लाभान्वित न हो।
4.इस प्रकार विकास परियोजनाओं से लाभान्वित 250 आदिवासी महिला श्रमिकों तथा विकास परियोजना से लाभ न लेने वाली 250 आदिवासी महिला श्रमिकों, इस प्रकार कुल 500 आदिवासी महिला श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

सारणी क्रमांक – 1
सर्वेक्षित विकासखण्डो से लाभान्वित तथा विकास परियोजनाओं से लाभ प्राप्त नही करने वाली आदिवासी महिला श्रमिकों की शैक्षणीक स्थिति का विवरण

ftyk	fodkl [k.M	fodkl ifj;ktuk l fgrxkgh rFkk ykHk iklr ugh dju okyh vkfnokl h efgyk Jfedk dh "k{k.khd fLFkfr																	
		fodkl ifj;ktukvk l ykHkkfUor fgrxkgh vkfnokl h efgyk Jfed									fodkl ifj;ktukvk l ykHk Åklr ugh yu okyh vkfnokl h efgyk Jfed								
		v& f"kf{kr	lk{kj	5oh-	8oh-	10oh-	12oh	Luk-rd	LukRdk -Ùkj	;kx	v& f"kf{kr	lk{kj	5oh-	8oh-	10oh-	12oh	Luk-rd	LukRdk -Ùkj	;kx
Lkjxtk	vfEcdkij	18 16-82	7 18-42	1 17-19	8 33-33	4 50	1 25	1 50	----	50 20	25 19-53	16 24-62	6 20	3 13-64	&&	&&	&&	&&	&&
	jkekutuxj	16 14-95	8 21-05	20 31-25	3 12-5	1 12-5	1 25	----	1 33-33	50 20	28 21-88	15 23-08	4 13-33	2 9-09	1 20	&&	&&	&&	&&
lkjtij	lkjtij	20 18-69	10 26-32	15 23-44	3 12-5	1 12-5	1 25	----	----	50 20	30 23-44	6 9-23	4 13-33	8 36-36	2 40	&&	&&	&&	&&
dkfj;k	euUnx<	25 23-36	5 13-16	13 20-31	6 25	1 12-5	-----	----	----	50 20	18 14-06	16 24-62	8 26-67	6 27-27	2 40	&&	&&	&&	&&
t"kij	iRFkyxko	28 26-17	8 21-05	5 7-81	4 16-67	1 12-5	1 25	1 50	2 66-67	50 20	27 21-09	12 18-46	8 26-67	3 13-64	&&	&&	&&	&&	&&
dy;kx		107 42-8	38 15-2	64 25-6	24 9-6	8 3-2	4 1-6	2 0-08	3 1-2	250 ¼100½	128 51-2	65 26	30 12	22 8-8	5 2	&&	&&	&&	&&

स्त्रोत– सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त प्राथमिक आकड़े।

सारणी क्रमांक 6.1

सारणी क्रमांक 6.1 में छत्तीसगढ़ राज्य के कुल सर्वेक्षित 5 विकासखण्डों में से विकास परियोजनाओं से लाभान्वित हितग्राही कुल सर्वेक्षित 250 आदिवासी महिला श्रमिकों तथा विकास परियोजनाओं से लाभ प्राप्त नहीं करने वाली कुल सर्वेक्षित 250 आदिवासी महिला श्रमिकों की शैक्षणीक स्थिती का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि विकास परियोजना से लाभान्वित कुल सर्वेक्षित 250 आदिवासी महिला श्रमिकों में से 107(42.8%)

महिला श्रमिक अशिक्षित है। जिनमें से सर्वाधिक 64(25.6%) महिलाएं 5वीं तक पढ़ी है। जबकि सबसे कम 2(.8%) महिला श्रमिक स्नातक है। इसी प्रकार साक्षर 38(15.2%), 8वीं तक 24(9.6%), 10वीं तक 8(3.2%), 12वीं तक 4(1.6%) तथा स्नात्कोत्तर 3(1.2%) हैं।

जबकि विकास परियोजना से लाभ प्राप्त नहीं करने वाली कुल सर्वेक्षित 250 आदिवासी महिला श्रमिकों में से 128(51.2%) महिलाएं अशिक्षित हैं जबकि 12वीं तथा स्नातक एवं सनात्कोत्तर तक एक भी महिला श्रमिक ने शिक्षा ग्रहण नहीं की है। इसीप्रकार सर्वाधिक 65(26%) महिलाएं केवल साक्षर हैं। जबकि 30(12%) महिलाएं 5वीं तक, 22(8.8%) महिला श्रमिक 8वीं तक तथा 5(2%) महिलाए 10वी तक की शिक्षा ग्रहण की हैं।

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि विकास परियोजना से लाभान्वित कुल सर्वेक्षित 250 आदिवासी महिला श्रमिकों में से सर्वाधिक 107(42.8%) महिलाएं अशिक्षिपत हैं जबकि विकास परियोजनाओं से लाभ प्राप्त नहीं करने वाली कुल सर्वेक्षित 250 आदिवासी महिला श्रमिकों में से 128(51.2%) महिलाएं अशिक्षित है। इसका तात्पर्य यह है कि विकास परियोजना से लाभान्वित महिलाए, विकास पिरयोजना से लाभ प्राप्त नहीं करने वाली महिला श्रमिकों से ज्यादा शिक्षित है। अतः स्पष्ट है कि विकास परियोजना का आदिवासी महिला श्रमिकों की शैक्षणिक स्थिती पर प्रभाव पड़ा है।

सारणी क्रमांक – 2
सर्वेक्षित विकासखण्डों में विकास परियोजना से लाभान्वित तथा विकास परियोजना से गैर लाभान्वित आदिवासी महिला श्रमिकों की अशिक्षित होने के कारण :–

ftyk	fodkl [k.M	fodkl ifj;kstuk l ykHkkfUor fgrxkgh vkfnoklh efgyk Jfed					fodkl ifj;kstuk l ykHk iklr ugh dju okyh vkfnoklh efgyk Jfed				
		i<uk ugh pkgrh	Ldy nj@ugh g	vkfFkd fLFkfr Bhd ugh g	vk; vtu djrh g	dy;kx	i<uk ugh pkgrh	Ldy nj@ugh g	vkfFkd fLFkfr Bhd ugh g	vk; vtu djrh g	dy;kx
Lkjxtk	vfEcdkij	2¼12-5½	8¼25-81½	3¼9-09½	5¼18-52½	18¼16-82½	---	2¼11-11½	8¼22-86½	15¼27-27½	25¼19-93½
	jkekutuxj	1¼6-25½	3¼9-68½	8¼24-24½	4¼14-81½	16¼14-95½	2¼10½	6¼33-33½	10¼28-57½	10¼18-18½	28¼21-88½
ljtij	ljtij	3¼18-75½	7¼22-58½	2¼6-06½	8¼29-63½	20¼18-69½	10¼50½	2¼11-11½	6¼17-14½	12¼21-82½	30¼23-44½
dkfj;k	euUnx<	2¼12-5½	5¼16-13½	12¼36-36½	6¼22-22½	25¼23-36½	1¼5½	4¼22-22½	5¼14-29½	8¼14-59½	18¼14-06½
t'kij	iRFkyxko	8¼50½	8¼25-81½	8¼24-24½	4¼14-81½	28¼26-17½	7¼35½	4¼22-22½	6¼17-14½	10¼18-18½	27¼21-09½
dy;kx		16¼14-95½	31¼28-97½	33¼30-84½	27¼25-23½	104¼42-8½	20¼16-63½	18¼14-06½	35¼27-34½	55¼42-97½	128¼51-2½

स्त्रोत– सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त प्राथमिक आकड़े।

सारणी क्रमांक – 2

सारणी क्रमांक 6.2 में विकास परियोजनाओं से लाभान्वित हितग्राही महिला श्रमिकों में से कुल 107(42.8%) अशिक्षित महिला श्रमिकों तथा विकास परियोजना से गैर लाभान्वित कुल अशिक्षित 128(51.2%) महिला श्रमिकों की अशिक्षित होने के कारणों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि विकास परियोजना से लाभान्वित कुल अशिक्षित 107(42.8%) महिला श्रमिकों में से सर्वाधिक 33(30.84%) महिला श्रमिकों की आर्थिक स्थिती छीक नहीं होने के कारण अशिक्षित रह गये जबकि 16(14.95%) महिलाएं पढ़ना नहीं चाती थी, इसी प्रकार स्कूल दूर/नहीं होने के कारण 31(28.97%) महिला श्रमिक अशिक्षित रह गयी। जबकि 27(25.23%) महिला श्रमिक आय अर्जन करने के कारण अशिक्षित रह गयी।

इसी प्रकार विकास परियोजना से लाभ प्राप्त नहीं करने वाली कुल सर्वेक्षित 250 आदिवासी महिला श्रमिकों में से कुल अशिक्षित 128(51.2%) महिला श्रमिकों में से सर्वाधिक 55(42.97%) महिलाओं की अशिक्षित होने का कारण उनका आय अर्जन में सहयोग करना था। इसीप्रकार 20(16.63%) महिलाएं पढ़ना नहीं चाहती थी तथा 18(14.06%) महिलाएं स्कूल दूर/नहीं होने के कारण शिक्षा ग्रहण नहीं कर पायी तथा 35(27.34%) महिला श्रमिक आर्थिक स्थिती खराब होने

के कारण शिक्षित नहीं हो पायी।

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट है कि विकास परियोजना से लाभान्वित वे महिला श्रमिक जो अशिक्षित है उनमें से अधिकांश 33(30.84%) महिला श्रमिकों के अशिक्षित होने का कारण आर्थिक स्थिती ठीक नहीं होना था जबकि विकास परियोजना से लाभ प्राप्त नहीं करने वाली अशिक्षित महिला श्रमिकों में से अधिकांश 55(42.97%) महिला श्रमिकों के अशिक्षित होने का कारण आय अर्जन करना था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.तिवारी आर.पी.,डी.पी.''भारतीय नारी वर्तमान समस्याऐं और भावी समाधान'' 14–30
2सिंह.ए.कें ''भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं विकास में योगदान'' 14–30
3मिश्र, श्री निवास,''भारतीय महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति''20–30 शोध प्रबंध
4तिवारी, तिवारी, आर.पी, तृप्ति ''महिला रोजगार मे स्थानिक एवं कालिक विभेद नगरीय मध्य प्रदेश का अध्ययन'' 20–30
5शुक्ला, शुक्ला, डी.पी, उषा '' भारतीय नारी संमस्याओं से समाधान तक''14–30 शोध प्रबंध
6.लारेंस, जस्मिन ''महिला श्रमिकों की सामाजिक स्थिति एवं समस्याऐं 14–30, शोध प्रबंध
7जैन, इंदु 2007''ग्रामीण श्रमिकों की दशा ओर दिशा'' मई, कुरूक्षेत्र. 13–18
8नारायण, एस, 2007''रोजगार संभावना पर नजर'' अप्रैल योजना 18–19
9सिंह.ए.कें''भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं विकास में योगदान'' 14–30
10.Research Journal of Social and Life Sciences, Vol 07, Year 04, Jul-Dec.,2009 pg. 277-282
11.Research Journal of Social and Life Sciences, Vol 06, Year 03, Jan-June,2009 pg.618-620
12.Research Journal of Social and Life Sciences, Vol 06, Year 03, Jan-June,2009 pg.640-642
13.Research Journal of Social and Life Sciences, Vol 06, Year 03, Jan-June,2009 pg.647-650
14.Research Journal of Social and Life Sciences, Vol 04, Year 02, Jan-June,2008 pg.351-354
15.Research Journal of Social and Life Sciences, Vol 04, Year 02, Jan-June,2008 pg.520-524

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org